डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए. ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-८

दासी मंथरा

अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद संजीव त्रिपाठी

दासी का वास्तविक अर्थ क्या होता है यह हमें मालूम नहीं है। आधुनिक मत के अनुसार उसे सेविका माना जा सकता है। मानव शास्त्र संस्कृति के अनुसार दासी प्रतिबद्धित सेविका होती थी, जो सेवा में सामजिक या शारीरिक मजबूरियों के कारणों से संलग्न रहती थी। हमने वाल्मीकि रामायण की कहानियों से जाना कि अधिकाँश सेवक/सेविकायें बोने होते थे, शायद शारीरिक परिस्थितियों के कारणों लोग अपने आपको दूसरों की सेवा में समर्पित कर देते थे। अधिकतर दास वह गुलाम होते थे जिन्हें आक्रमण या युद्ध के द्वारा हासिल किया जाता था। मध्यकालीन भारत में कवियों और लेखकों ने दास और दासी शब्द का प्रयोग ईश्वर की अनन्य भक्ति में लिप्त और पूर्ण समर्पित लोगों के लिये भी किया जाता था।

दास प्रथा की जड़ें सामाजिक संरचना के अलावा समाज के एक ऐसे आर्थिक वर्ग से जुड़ी हुई थी जिनका यह कार्य पैतृक पेशा था और विकलांग और सीमित शारीरिक क्षमताओं वाले लोगों के लिए भी रोजगार की सुनिश्चित व्यवस्था रहती थी। वाल्मीकि की मंथरा भी ऐसे ही वर्ग में शामिल है। ऐसा लगता है कि वह ऐसे परिवार से थी जिसने राजघराने की सेवा करने में बेहद भरोसा जीता हुआ था। विश्वासपात्र बनना काफी कठिन कार्य है और भरोसा जीतने के लिये समर्पित सेवा करते-करते कई पीढ़ियाँ लग जाती हैं। ऐसा लगता है कि मंथरा, राजकुमारी कैकेयी की बालकाल से ही संरक्षक थी और कैकेयी के राजा दशरथ से विवाह के पश्चात वह भी अयोध्या साथ आ गई थी। वह कैकेयी की सहेली जैसी थी और कैकेय के राजा ने उसे कैकेयी की देखभाल और अपने वंश के निहित स्वार्थ की रक्षा के लिए साथ भेजा था।

> *मध्यकालीन भारत में कवियों और लेखकों ने दास और दासी शब्द का प्रयोग ईश्वर की अनन्य भक्ति में लिप्त और पूर्ण समर्पित लोगों के लिये भी किया जाता था।*

कैकेयी और दशरथ के विवाह का एक और कारण यह भी था कि दशरथ को पुत्र की लालसा थी जो उनके राज्य का उत्तराधिकारी बन सके, दशरथ एक महान राजा थे पर उनके कोई पुत्र नहीं था। वह वृद्ध थे, पुत्र की चाहत में उनके पहिले

कौसल्या सबसे बड़ी रानी थी और राजा दशरथ उनके के पद का सम्मान करते थे, लेकिन वह अपना अधिकाँश निजी समय कैकेयी के साथ ही गुजारते थे और यात्रा और युद्ध क्षेत्रों में भी साथ में ले जाते थे। राम की प्रतिभा से प्रभावित होकर राजा दशरथ ने राम को अयोध्या का उत्तराधिकारी बनाने का मन बना लिया था।

से दो विवाह चुके थे पर फिर भी सफलता नहीं मिली थी। हालाँकि वाल्मीकि ने स्पष्ट रूप से नहीं बताया लेकिन हमें कहानी से ऐसा प्रतीत होता है कि कैकेयी के पिता से ऐसा वादा किया गया था, कि अगर कैकेयी के पुत्र होता है तो वही अयोध्या का उत्तराधिकारी होगा। दुर्भाग्य से कैकेयी गर्भवती नहीं हो सकी जिससे राजा दशरथ और पूरे राजघराने को असंतोष था। अंत में राजा ने अपने दामाद श्रृंगी ऋषि की सहायता से एक विशेष यज्ञ का आयोजन किया और इस बार सफलता स्वरूप चार पुत्र प्राप्त हुये जिसमें राम का जन्म सबसे पहिले हुआ।

राम सद्गुणी युवा और सबके स्नेह पात्र थे, उनके विनम्र व्यवहार के सभी लोग प्रशंसक थे। माँ कौसल्या का अपने बेटे के लिए दुलार सर्वविदित था। कौसल्या और कैकेयी के रहन-सहन में बहुत भिन्नता थी, जहाँ एक और कौसल्या पूजा-पाठ और अध्यात्मिक कार्यों में व्यस्त रहती थी, तो वहीं, कैकेयी को ऐश्वर्य और शान शौकत की जीवन शैली पसंद थी। कौसल्या सबसे बड़ी रानी थी और राजा दशरथ उनके के पद का सम्मान करते थे, लेकिन वह अपना अधिकाँश निजी समय कैकेयी के साथ ही गुजारते थे और यात्रा और युद्ध क्षेत्रों में भी साथ में ले जाते थे। राम की प्रतिभा से प्रभावित होकर राजा दशरथ ने राम को अयोध्या का उत्तराधिकारी बनाने का मन बना लिया था।

राजा ने राम के राज्याभिषेक का निर्णय जल्दी ले लिया जब कैकेयी के पुत्र भरत ननिहाल में थे। हालाँकि वाल्मीकि ने स्पष्ट नहीं किया, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि दशरथ राम का राज्याभिषेक भरत की अनुपस्तिथि में करना चाहते थे। इस विचार की अनुभूति इस बात से भी होती है कि इस अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय के बारे में राजा दशरथ ने कैकेयी को नहीं बताया। हालाँकि कैकेयी राम को बहुत स्नेह करती थी लेकिन राजा दशरथ राज्याभिषेक में किसी तरह के व्यवधान से बचना चाहते थे। राजा के मन में संकोच था कि अगर कैकेयी के विवाह के समय दिए गए वचन के अनुसार भरत का गद्दी पर अधिकार बनता है जो एक व्यवधान पैदा कर सकता है। इस वचन के बारे में बहुत लोग नहीं जानते थे, पर मंथरा को कैकेय नरेश ने इसी बात को ध्यान में रखकर नियुक्त किया था कि वह अयोध्या के राज सिंहासन पर कैकेय वंश की तरफ से नज़र रख सके।

मंथरा चालाक और विश्वास पात्र थी, उसे कौसल्या का भोलापन और पूजा-पाठ वाला व्यवहार कभी पसंद नहीं था, ऐसा लगता है कि कौसल्या और कैकेयी के संस्कार और बचपन की परिवरिश का परिवेश बहुत भिन्न थे। मंथरा कुबड़ेपन और बदसूरत होते हुये भी काफी सजी-धजी रहती थी जो कौसल्या को बिलकुल पसंद नहीं था। मंथरा कैकेयी और कौसल्या में वैमनस्यता पैदा करने में अहम् भूमिका अदा कर रही थी, हालाँकि कैकेयी राम को अति स्नेह करती थी। जब मंथरा को पता चला कि छत के ऊपर से देखा कि कौसल्या राहगीरों को उपहार बाँट रही है तो वह स्तब्ध रह गई। पूछने पर उसे पता चला कि उपहार राम के कल सुबह होने वाले राज्याभिषेक की ख़ुशी में बांटे जा रहे हैं। उसके जीवन का कर्त्तव्य कैकेय वंश की तरफ से अयोध्या के राज सिंहासन पर नज़र रखना था, इसलिए उसने इस मौके पर अपना फ़र्ज निभाना उचित समझा और अपने कार्य में जुट गई।

बहुत से लोग जो राम के अनन्य भक्त हैं वो मंथरा को सारा दोष देते हैं। यह सही भी है कि उसने अच्छे कार्य में विघ्न डाल दिया, जिसकी शुरुआत ही गलत हुई थी। वाल्मीकि के व्याख्यान से ऐसा मालूम होता है कि राजा दशरथ चुपचाप इस कार्य को अंजाम देना चाहते थे, मंथरा ने पकड़ लिया और पूरे कार्य को बिगाड़ दिया। राजा बहुत निराश थे और उनके पास बोलने को कोई शब्द नहीं थे। शायद ही कोई कवि एक शक्तिशाली राजा की इस असहाय दशा का वर्णन करेगा। राजा अपने जाल में खुद ही फँस गये। हो सकता है राजा दशरथ ने इस तरह की चालाकी पहले भी की हो लेकिन इस बार मंथरा ने बहुत होशियारी दिखाई और बाज़ी उलट दी। अपना कार्य कर दिया। उसका उद्देश्य अयोध्या के राज सिंहासन को कैकेयी के पुत्र भरत के लिये सुरक्षित रखना था। वह चाहती थी कि राम कहीं बहुत दूर चले जायें और भरत के रास्ते का रोड़ा न बने। दशरथ राम का राज्याभिषेक भरत की अनुपस्थिति में कराना चाहते थे, लेकिन मंथरा इस शह और मात के खेल में उनसे आगे निकली, वह कोई गुंजाइश नहीं छोड़ना चाहती थी, इसलिये उसने राम को वन भेजने की योजना बनाई।

कैकेयी सीधी सच्ची थी इसलिए उसके परिवार वाले चाहते थे कि उसके साथ हमेशा एक भरोसेमंद और चतुर दासी हो जो उसके हितों की रक्षा कर सके। मंथरा अनुभवी थी और साथ ही वह कैकेयी की विश्वासपात्र भी थी। कैकेयी बहुत खुश हुई जब उसे पता चला कि राम का राज्याभिषेक होने जा रहा है, उसने मंथरा को कई तरह के उपहार इस खुशखबरी को सुनाने के लिये दिये। मंथरा ने कैकेयी को ये समझाने का काफी प्रयास किया कि यह समाचार उसके लिए शुभ नहीं है, लेकिन कैकेयी इस बात से सहमत नहीं हुई और उसने मंथरा को और उपहार दिये। तब मंथरा ने कैकेयी को उपहास रूप में यह बताया कि भरत को मारा जा सकता है, राजा ऐसा ही करते हैं। कैकेयी के अपने परिवार की संस्कृति विरासत की वजह से वह मंथरा के इस उपहास के जाल में फँस गई। मंथरा कैकेयी को समझाने लगे कि राजा की भोग विलासिता का फायदा कैसे लिया जा सकता है। राजा रात्रि में कैकेयी के महल में आये और मंथरा अपने खेल में सफल रही, कैकेयी ने ठीक वैसे ही किया जैसे मंथरा ने सिखाया था।

जब राम वन को जा रहे थे तब मंथरा ने अपनी भावनाएं बिल्कुल भी व्यक्त नहीं की, लेकिन जब भरत आये और सब कुछ उलट गया, तो वह डर गई। भरत ने अपनी माँ कैकेयी को काफी भला बुरा कहा लेकिन उस समय कैकेयी ने यह नहीं बताया कि यह सब मंथरा का किया धरा है। हो सकता है मंथरा को परिवार की और भी कुछ गुप्त बातें मालूम थी। समाज में ऐसे विचित्र लोग होते हैं जो लोगों को एक दूसरे के खिलाफ भड़काते हैं। वास्तव में वह अपने आप को सुरक्षित रखने की कोशिश करते हैं। मंथरा ने सोचा होगा की दशरथ के सिंहासन अवरोहन के पश्चात जब कौसल्या राज माता बन जाएगी तो उसकी जिंदगी मुश्किल भरी होगी। अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये उसने कैकेयी के समाज में बदनामी की परवाह भी नहीं की।

अंत में राजा दशरथ की मृत्यु के पश्चात् जब मंथरा का प्रभाव कैकेयी पर कम हो गया और उसे लगा कि उसकी सारी योजना विफल हो गई, तो मंथरा को अपने किये पर पश्चाताप हुआ। भरत ने सिंहासन पर बैठने से मना कर दिया और राम को जंगल में ढूंढ़ने और अयोध्या वापिस लाने की तैयारी शुरू कर दी। कुछ समय में कैकेयी को यह आभास हो गया की बहुत बड़ी घटना हो गयी, राजा दशरथ गुजर गये और उसे बिल्कुल मालूम नहीं था कि उसका बेटा उसके खिलाफ हो जायेगा। मंथरा को कुछ आभास था लेकिन उसने यह नहीं सोचा था राजा दशरथ की मृत्यु हो जायेगी। उसे मानवीय भावनाओं से खेलने का कुछ अनुभव था लेकिन अयोध्या में बात कुछ ज्यादा ही गंभीर हो गयी और वह उसे सम्हाल नहीं सकी। वह बहुत निराश हो गयी और किसी तरह अपना जीवनयापन की कोशिश करती रही।

जब भरत सभी परिजनों के साथ राम को वापिस लाने के लिये वन गये तब मंथरा भी उनके साथ गयी। जब हर समय भरत अपनी माँ कैकेयी को इस घटनाक्रम के लिये दोषी ठहराते तो मंथरा ने कभी भी कैकेयी का बचाव नहीं किया। या तो वह बहुत डर गयी होगी या वह बहुत उलझन में थी और अपने आप को अकेला महसूस कर रही थी।

जब भरत सभी परिजनों के साथ राम को वापिस लाने के लिये वन गये तब मंथरा भी उनके साथ गयी। जब हर समय भरत अपनी माँ कैकेयी को इस घटनाक्रम के लिये दोषी ठहराते तो मंथरा ने कभी भी कैकेयी का बचाव नहीं किया। या तो वह बहुत डर गयी होगी या वह बहुत उलझन में थी और अपने आप को अकेला महसूस कर रही थी। वह कैकेयी की सलाहकार थी लेकिन ऐसे समय में उसका कोई सलाहकार नहीं था। ऐसा हो सकता है कि ऐसे लोग किसी की बात सुनते नहीं और केवल अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए अपने तरीके से कार्य करते हैं। ऐसे लोग दोषारोपण के लिये काफी कमजोर और असुरक्षित होते हैं, लेकिन वे पूरे ब्रह्माण्ड को दूषित कर सकते हैं। ■